आज का पुरुषार्थ 18 June 2022

Source: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *" आज स्वयं को संतुष्टता से भरपूर करना है, तो देखे कोई भी असंतोष अपने अंदर न रहे "*

भगवान को पाकर हम पूरी तरह **तृप्त** हो गये। हम बहुत **सुखी** हो गये। हमारे मन से सच्चे दिल से आवाज़ निकलनी चाहिए ***बाबा आपको पाकर हम तृप्त हो गये।*** हम बहुत सुखी हो गये।

यह आवाज़ बार-बार दिल से निकलेगी तो यह दोनों चीज़ें बढ़ती जायेगी और हम बन जायेंगे **संतुष्ट मणि।**

संतुष्ट मणि बहुत **प्रकाशित** होते है। जैसी **प्योरीटी** का प्रकाश बहुत तेज है, जैसे योग से हमारा प्रकाश बढ़ता है, वैसे ही प्रकाश बढ़ते है हमारी संतुष्टता से।

क्योंकि इससे हमारा चित्त **शान्त** रहता है। व्यर्थ की तृष्णाओं के पीछे मन नहीं भटकता है। हम बहुत सुखी हो जाते है। जो संतुष्ट है वह सचमुच बहुत सुखी है।

बाबा कहते है .. " *मुझे संतुष्ट आत्मायें बहुत प्रिय लगते है*" ... तो check कर ले स्वयं को, ऐसा तो नहीं हम दुसरों से **तुलना** (compare) करके असन्तुष्ट हो जाते है।

ऐसा तो नहीं **व्यर्थ की इच्छायें और तृष्णायें हमें असन्तुष्ट करती है।** ऐसे तो नहीं कि **मान-सम्मान** की कोई इच्छा या कोई अवसर न मिलने के कारण हम निराश और असंतुष्ट हो जाते है।

नहीं, हमें तो संतुष्ट मणि बनना है। संतुष्ट आत्माओं को स्वतः ही **श्रेष्ठ** अवसर (opportunity) प्राप्त हो जाता है। चाहे वह सेवाओं के अवसर हो, चाहे लौकिक में कोई अवसर हो। हाँ उन्हें थोड़ी इन्तजार (patience) अवश्य करना पड़ता है।

परन्तु **धैर्य** (patience) पूर्वक इन्तजार कर लेनी चाहिए। और जब वह चीज़ प्राप्त होगी तब वह everlasting हो जायेगी। सदा चलने वाली हो जायेगी।

तो आओ हम भगवान को पाकर **सम्पूर्ण संतुष्ट** आत्मायें बन जाये। सोचो, यदि भगवान को पाकर भी कोई संतुष्ट नहीं हुआ तो क्या चारों युगों में और कुछ पाकर वह आत्मा संतुष्ट हो पायेगी?

जब हम **स्वयं संतुष्ट** होंगे तो दुसरों को **संतुष्ट** करने की कला भी आ जायेगी। हमारे पास भिन्न भिन्न तरह की आत्मायें आती है। किसी की कोई संस्कार होते है तो किसी के कोई। एक परिवार में भी यही स्थिति रहती है ।

लेकिन जो बड़े होते है वह दूसरों को संतुष्ट करना अपना लक्ष्य बना लेना चाहिए। यदि कोई अपने **संस्कारों** के कारण संतुष्ट न हो, हमारे प्रयास करने के बाद भी तो उसके जिम्मेदार वह आत्मा स्वयं है।

लेकिन हम कोशिश करे, जिसको **मान** चाहिए उसे मान देकर संतुष्ट कर दे। जिसे अवसर चाहिए उसे **अवसर** प्रदान करके संतुष्ट कर दे।

जिसमें कोई **योग्यता** हो, उसकी योग्यता को यूज़ करके उसे संतुष्ट कर दे। कुछ आत्मायें **मुरली सुनकर** संतुष्ट होती है। तो कुछ आत्मायें बहुत अच्छा योग करने के बाद संतुष्ट होती है।

हम स्वयं भी योगयुक्त होकर स्वयं को संतुष्ट करना अपना लक्ष्य बना ले। तो जितना जितना हम संतुष्ट होंगे, उतना हम दूसरों को संतुष्ट करना सीखते भी जायेंगे।

" भगवान को पाकर मैं कितना संतुष्ट हूँ .. मैं तो प्रभु की संतुष्ट मणि हूँ .. संतोष मेरे पास सबसे बड़ा खजाना है "

और फिर अभ्यास करेंगे ...

" बाबा परमधाम से उतरकर आ रहे है धीरे धीरे ..और मेरे सिर के ऊपर आकर वो छत्रछाया बन गया "

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org